हरबर्ट विधि/पंचपदी विधि (1838)

हरबर्ट की पाठ योजना प्राचीनतम पाठ योजनाओं में से एक है इस पाठ योजना के जन्मदाता प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री हरबर्ट है, अधिगम के संबंध में इनकी धारणा है कि प्रत्येक विद्यार्थी बाहर से मिलने वाले ज्ञान को संचित करता रहता यदि नवीन ज्ञान को छोटे-छोटे सोपानों में बांटकर उसे पूर्व संचित ज्ञान से संबंधित करके पढ़ाया जावे तो विद्यार्थी उसे अधिक शीघ्रता एवं सुगमता से ग्रहण करते है।

हरबर्ट पाठ योजना में स्मृति स्तर पर सीखने को अधिक प्रभावशाली माना जाता है यह पाठ योजना विषयवस्तु केन्द्रित है। इसमें पाठ को छात्रों के समक्ष प्रस्तुतीकरण को अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। विद्यार्थियों की रुचियों, आवश्यकताओं व मूल्यों आदि को इसमें विशेष स्थान नहीं दिया जाता है।

हरबर्ट ने कहा शिक्षण के लिए सर्वप्रथम निम्न चार पदों का प्रतिपादन किया-

स्पष्टता:- तथ्यों व विषयसामग्री को शिक्षार्थी के समक्ष स्पष्टता से प्रस्तुत करना।

Scanned with CamScanner

सम्बद्धता :-

प्रस्तुत किये जाने वाले तथ्यों या नवीन ज्ञान को विद्यार्थी के पूर्व ज्ञान से सम्बद्ध करना।

नियमीकरण / व्यवस्था :-

विद्यार्थी के समक्ष प्रस्तुत किये जाने वाले तथ्यों व नवीन ज्ञान को व्यवस्थित रूप देना।

विधि :-

अध्यापक को नवीन परिस्थितियों में प्राप्त ज्ञान के प्रयोग को ध्यान में रखना चाहिए।

हरबर्ट ने उपर्युक्त चार सोपानों की विवेचना की जिसे उसके शिष्यों / अनुयायियों ने अधिक स्पष्ट व महत्वपूर्ण बनाने का प्रयास किया। उनके शिष्य जिलर ने सर्वप्रथम "स्पष्टता" को दो भागों में विभक्त किया :-

(1) प्रस्तावना

(2) प्रस्तुतीकरण

हरबर्ट के एक अन्य शिष्य राइन ने इनमें एक कथन और जोड़ा, वह था :- उद्देश्य। इस परिवर्तन के बाद प्रथम दो पद इस प्रकार हो गए :-

1. प्रस्तावना
   व उद्देश्य कथन

2. प्रस्तुतीकरण

Page No.
Date :

इसके बाद हरबर्ट के अनुयायियों ने हरबर्ट के शेष तीन पदों के नामों में भी इस प्रकार परिवर्तन कर दिए:-

सम्बद्ध - तुलना
व्यवस्था - सामान्यीकरण
विधि - प्रयोग

इस प्रकार हरबर्ट के शिक्षण पद अन्तिम रूप से इस प्रकार हैं:-

1 (अ) प्रस्तावना
(ब) उद्देश्य कथन
2 प्रस्तुतीकरण
3 तुलना
4 सामान्यीकरण
5 प्रयोग

Scanned with CamScanner